विनाश छोड़, निर्माण अपनाएँ

* ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

धीमी होते-होते अचानक ट्रेन ठहर गई। चुरू और राजगढ़ के बीच, 12 बजे की जलती दोपहर में, बाजरे के खेतों के बीच ट्रेन के खड़े होने का कारण शायद कोई दूसरी ट्रेन की क्रॉसिंग होगी, हम यही सोचकर ज्ञान-चर्चा में लगे रहे। अभी पाँच मिनट भी नहीं हुए थे, अचानक एक बहन ने हमारी ज्ञान-चर्चा के बीच व्यवधान डालते हुए कहा, निकास द्वार पर चलकर तो देखो, बाहर क्या हो रहा है। उत्सुकतावश मैं और मेरे साथ 5-7 यात्री बहनें-भाई द्वार पर खड़े हुए और बाहर देखने लगे।

कुछ नौजवान खड़ी ट्रेन में से उतरकर बाजरे के खेतों में घुस गए थे। वहाँ लगे तरबूज तोड़-तोड़कर कन्धों पर जितने रख सकते थे, रखकर वापस ट्रेन की ओर आ रहे थे। ट्रेन की लाइन के पास पड़ी पत्थर की रोड़ियों पर बैठकर उन्होंने मुक्के मार-मार कर उन तरबूजों को फोड़ना शुरू किया। पर यह क्या, तरबूज कच्चे निकले, अन्दर की सफेद गिरी (गुदा) देखते ही तोड़ने वालों ने उन्हें खेतों की तरफ वापस फेंक दिया और ट्रेन में चढ़ गए।

क्या ये बद्दुआएँ लेने उतरे थे?

विद्या, धन और शारीरिक बल – तीनों से सम्पन्न उन नौजवानों को देखकर मेरा मन करुणा से भर उठा। विचार चला, इन्होंने तोड़कर फेंकने की यह मेहनत क्यों की? चिलचिलाती धूप में ट्रेन से उतरकर, गर्म रेत में भटकने के बाद इनके हाथ क्या लगा? किसी का नुकसान हुआ और इन्हें बदले में मिलेंगे...। जब किसान खेत के किनारे पड़े कच्चे, फूटे तरबूजों को देखेगा, कलेजे पर हाथ रख लेगा। उसकी आँखों के सामने तोड़ने वाले हाथ घूमने लगेंगे, क्या वह उन हाथों को दुआ दे पाएगा? क्या ये बद्दुआएँ लेने उतरे थे? भगवान करे, वो इन्हें माफ कर दे।

ज्वलन्त जरूरत है
नैतिक ज्ञान की

पुन: संकल्प आया, ट्रेन यदि खड़ी हो गई तो उन 15-20 मिनटों में कोई रचनात्मक कर्म भी तो हो सकता था। ये खेत में जाकर बाजरे के पौधों के साथ उगी घास को भी तो उखाड़ सकते थे, यह इस देश की कृषि में इनका रचनात्मक योगदान होता। ये पढ़े-लिखे हैं, अपने साथ कोई पुस्तक लाते, उसे पढ़कर समय सफल करते। ट्रेन में कई बुजुर्ग बैठे हैं, उनसे बातचीत कर लेते, उनके अनुभव पूछ लेते। कई बच्चे घूम रहे हैं, उनकी तोतली बातें सुन लेते। और कुछ नहीं तो अपने इष्ट में ध्यान लगाकर समय सफल कर लेते। करने को तो बहुत कुछ रचनात्मक कर सकते थे और इस विनाश-प्रक्रिया से बच सकते थे। चोरी से तो अच्छा था कि ट्रेन के शीशे ही चमका देते। मेरी विचार शृंखला इस निष्कर्ष पर आकर ठहर गई कि दया और सहानुभूति, नैतिकता, आध्यात्मिकता तथा कर्मगति की शिक्षा के अभाव में मानव के कर्म परपीड़ाजनक और विनाशकारी हो रहे हैं। मुझे महसूस हुआ कि देश के नौजवानों को नैतिक ज्ञान की ज्वलन्त ज़रूरत है।

बनाने वाला महान है,
मिटाने वाला तुच्छ है

भारत की खेती को उजाड़ने में अंग्रेज़ों ने कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी थी। भारी लगान के साथ हिंसा और अन्य अत्याचारों ने किसानों की कमर तोड़ डाली थी। वे खड़े खेतों में अपने घोड़े छोड़ देते थे, खेत कुछ खा लिए जाते थे और कुछ रोंद दिए जाते थे। भारी कुर्बानी देकर हमने उन्हें इस देश

से खदेड़ दिया ताकि हमारी कृषि और कृषक पुन: बुरे दिन ना देखें। पर यह क्या, ये कौन पैदा हो गए जिनकी शक्ल अपनों जैसी है पर कर्म परायों जैसे हैं। कृषि के दुश्मन तो वैसे ही बहुत हैं। कभी बन्दरों का उत्पात, कभी नील गायों का, कभी अतिवृष्टि, कभी अनावृष्टि, कभी ओले और कभी अंधड़। इन सबके बीच हर मौसम को झेलता हुआ, कभी ठिठुरता हुआ और कभी पसीना बहाता हुआ किसान, एक प्रहरी की भाँति अटल खड़ा रहता है। क्या हमें डाका डालने के लिए वही मिला? क्या हम इतने गरीब हैं कि उस गरीब से भी निरुद्देश्य छीनना चाहते हैं? पिछले कितने ही दिनों से जिन्हें वह सन्तान की तरह पाल रहा था, उन्हें तोड़ने और फेंकने में तो मात्र 5-10 मिनट ही लगे। बनाने में समय लगता है, मिटाने में नहीं। बनाने वाला महान है, मिटाने वाला तुच्छ है।

पूजा के साथ कर्मगति को भी समझें

गणेश चतुर्थी नज़दीक थी। मेरे साथ खड़ी महिला कहने लगी, मैंने गणेश जी की कहानी में सुना है, एक बार एक किसान के खेत से 16 दाने ले लेने की गलती उनसे हो गई थी, उन्हें 16 वर्षों तक उसके यहाँ सेवा करनी पड़ी थी। हमारी संस्कृति इतनी महान है जो देव-जीवन के माध्यम से हमें कर्म की गहन गति समझाती है। हम केवल गणेश जी की पूजा ही न करें बल्कि उनके जीवन से यह भी समझें कि कर्म का फल अनिवार्य रूप से स्वीकार करना पड़ता है, कोई भी इससे छूट नहीं सकता।

घोर मुसीबत सामने हो तो भी अनैतिक कर्म न करें

जब हम किसी का कुछ छीन रहे होते हैं, तोड़ते हैं, बरबाद करते हैं, नष्ट करते हैं, मिटाते हैं, खराब करते हैं तब हम इस ब्रह्माण्ड में नकारात्मक ऊर्जा फैला रहे होते हैं। जो देते हैं, भेजते हैं, फैलाते हैं वही तो हमारे पास अनिवार्य रूप से लौटता भी है। तो जो ऊर्जा हमने भेजी वह ब्रह्माण्ड की और भी नकारात्मक ऊर्जा को साथ लेकर हमारे पास लौट आती है। जब कहीं दुर्घटना हो जाती है तो दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति और उनके नजदीकी प्रियजन बहुधा यह कहते हुए सुने जाते हैं कि भगवान को हम ही मिले क्या, हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ? पर जब हम नकारात्मक कर्म करते हैं तब नहीं सोचते कि हम ही यह कर्म क्यों कर रहे हैं? क्या उस नकारात्मक कर्म के बिना हमारा जीना दूभर हो रहा था। नैतिकता का नियम तो यह कहता है कि घोर मुसीबत सामने हो तो भी छीनने, चोरने, मारने, काटने का कर्म न करो और हम बिना किसी आवश्यकता के मात्र लोभ-लालच के वशीभूत हो ऐसे कर्म कर बैठते हैं तो बदले में बैठे-बैठे बिना बात मुसीबतें भी झेलते हैं।

बुराई को अंकुरण के समय ही उखाड़ फेंकें

पुराने समय की बात है, एक साधु ने एक किसान से पानी और कुछ खाने के लिए मांगा। किसान ने पानी पिला दिया और कुछ खिलाने से यह कहकर मना कर दिया कि मेरे खेत में उपजा अन्न राजसिक है, आपकी साधना बिगड़ जाएगी। साधु ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा, मेरे पापी बैल ने पड़ोसी के खेत में घुसकर कुछ फसल खा ली थी। उस बैल से जोता हुआ अन्न राजसिक हो गया, सात्विक नहीं रहा। साधु यह सुनकर किसान को आशीर्वाद देकर आगे चला गया। जिस देश की संस्कृति इतनी महान है, उस देश के बच्चे-बच्चे को उस महान संस्कृति की जानकारी होनी चाहिए ताकि उनके कर्म महान हों। बात भली हो चाहे बुरी, छोटी हो या बड़ी, उसे करने से हमारे संस्कार वैसे बन जाते हैं। इसीलिए तो कहा जाता है, बुराई को उसी समय उखाड़ फेंको जब उसका अंकुरण हो रहा है। तरबूज तोड़ना, फेंकना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है पर हमारे संस्कार तो गलत दिशा में जा रहे हैं ना। ये संस्कार कल हमें और अधिक बड़े विनाश की ओर ले जाएँ,

यह असम्भव नहीं है।

भगवान को कहते हैं, बिगड़ी बनाने वाला, न कि बिगाड़ने वाला। भगवान के बच्चे हम भी तो उन जैसे बनें। बिगड़ी को बनाएँ, न कि बनी को बिगाड़ें। जो औरों के काम बनाएगा उसके अपने काम बन जाएँगे, जो औरों के काम बिगाड़ेगा, उसके अपने काम भी बिगड़ जाएँगे। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सभी शाखाओं में बच्चे से लेकर बूढ़े तक को कर्मों को सुखदायी बनाने की शिक्षा दी जाती है। इस नि:शुल्क शिक्षा का लाभ आप भी उठाइये और अपने जान-पहचान वालों को भी दिलवाइये। ऐसी शिक्षा से हर नागरिक कर्मठ, सच्चा और चरित्रवान बनेगा, वह निर्माण करेगा, विनाश नहीं। ❖

सफलता का मंत्र...पृष्ठ 31 का शेष

भी सफलता दिलाता है। हम ऐसे सहयोगी बनें जो दूसरे हमें देखकर योगी बन जाएँ।

सर्व का सहयोग लेना, यह कोई परावलम्बी स्थिति नहीं है बल्कि इससे तो यह सिद्ध होता है कि सभी के दिल में हमारे प्रति स्नेह है। सभी हमारी सफलता चाहते हैं। यह सहयोग हमारी लोकप्रियता का द्योतक है। सहयोग के प्रकार एवं विधियां अलग-अलग हो सकती हैं। यह सहयोग तन-मन-धन-जन-साधन आदि किसी भी रूप में मिल सकता है। सबसे श्रेष्ठ सहयोग है कार्य के प्रति शुभ संकल्प।

ब्रह्माकुमारीज़ में राजयोग का अभ्यास करते-करते परमात्मा पिता भोलेनाथ शिवबाबा ने हमारे जीवन में वे गुण और शक्तियां भर दिए हैं जिनसे स्वत: ही सर्व का सहयोग मिलता है और अन्तत: सफलता प्राप्त होती है। तो आइये, सफलता प्राप्ति के लिये हम सभी दूसरों से सहयोग प्राप्त करने की कला सीखें। ❖

भगवान की पनाह में

ब्रह्माकुमारी आशा, अजमेर

सन् 1998 में एक पर्चा मेरे हाथ में आया। उसे पढ़कर ज्यादा जानने की उत्सुकता जगी तो बस में साथ आने-जाने वाली एक सहशिक्षिका ने ईश्वरीय ज्ञान की कुछ कैसेट्स दीं। उनसे ज्ञान की बातें सुनीं और एक दिन समय निकालकर सेवाकेन्द्र पर गई। वहाँ बाबा के महावाक्य सुनाये जा रहे थे। मुझे पता नहीं था कि यह वही मुरली है जिसे सुनने के लिए गोप, गोपियाँ तड़पते थे। मैं उसे सुनकर अपनी सुध-बुध खो बैठी। ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे ज्ञान सागर मुझ ज्ञान की प्यासी आत्मा की प्यास बुझा रहे हैं। फिर तो सेवाकेन्द्र जाने की लगन लग गई। ब्रह्माबाबा और मम्मा का घर में ही साक्षात्कार हुआ। और भी कई साक्षात्कार हुए। धारणाएँ आसानी से हो गईं, छह महीने में मधुबन आने का सौभाग्य भी मिल गया, भगवान से मिलन मनाया और अपने को शक्तिशाली अनुभव किया।

ज्ञान में चलते-चलते लौकिक परिवार में कई परीक्षाएँ आईं। पति को हृदयाघात हुआ, उन्हें तीन ब्लाकेज बताये गए और आपरेशन की तैयारी हुई। आपरेशन के एक दिन पहले बाबा ने कुछ टचिंग कराई, जिसके आधार पर मैंने आपरेशन करने से मना किया और भरी हुई 50,000 रुपये फीस वापिस ले आई। इसके बाद उन्हें ज्ञान का कोर्स कराया। परिणाम यह निकला कि आज वे स्वस्थ हैं। नियमित क्लास करते हैं। एक बाबा में सम्पूर्ण निश्चय के आधार पर सभी समस्याएँ खत्म होती गईं। अलौकिक जीवन खुशहाल होता गया। परिवार के सभी सदस्य बाबा के कार्य में सहयोगी बन गये हैं। एक दिन गीत बजा 'तेरी पनाहों में पलते हैं, तेरी ही राहों पे चलते हैं।' उसे सुन बाबा के प्यार में खो गई और दिल से निकला धन्यवाद बाबा, जो आपने मुझे अपनी पनाह में ले लिया। ❖